31

हमारे दो परिवार

मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:20, 21, 31-35; लूका 8:19-21, एक निकट दृष्टि

गलील के दूसरे दौरे के अन्त में, यीशु का एक बहुत व्यस्त दिन था।[1] दिन का आरम्भ अन्धे और बहरे, दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी को चंगा करने से हुआ था (मत्ती 12:22, 23)। इस से यीशु पर यह आरोप लग गया कि उसने शैतान की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकाला है (मत्ती 12:23-30)। इस आरोप पर यीशु के उत्तर के बाद, उसके शत्रुओं ने ''आकाश का चिह्न'' देखने की मांग की (लूका 11:16)। विवादों से भरे दिन में, एक छोटी सी अलग घटना हुई। मरकुस का वृत्तांत बताता है:

> तब उस की माता और उसके भाई आए, और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा। भीड़ उसके आसपास बैठी थी, और उन्होंने उस से कहा; देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं। उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं? और उन पर जो उसके आस-पास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन और माता है (मरकुस 3:31-35)।

इस भाग को पढ़ने पर, मन में कई प्रश्न उठते हैं: ''सुसमाचार के लेखकों का यह बताने का क्या उद्देश्य था?''; ''यीशु ने अपने परिवार को विशेषकर अपनी माता को मान्यता क्यों नहीं दी?''; ''परमेश्वर इस घटना से हमें क्या सिखाना चाहता है?'' ''हमारे दो परिवार'' का अध्ययन करते हुए उम्मीद है कि हमें इन व अन्य प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे।

यीशु के दो परिवार

आइए यीशु के दो परिवारों से आरम्भ करते हैं।

यीशु का शारीरिक परिवार

अधिकतर लोगों को मालूम है कि यीशु का जन्म एक शारीरिक परिवार में हुआ था। यूसुफ उसका कानूनी तौर पर पिता था (मत्ती 1:16; लूका 3:23; यूहन्ना 1:45; 6:42),

और मरियम उसकी माता थी (मज़्ी 1:18; 2:11; 13:55; लूका 2:34)। मसीह के जन्म तक मरियम कुंवारी ही थी; परन्तु उसके जन्म के बाद, यूसुफ और मरियम पति–पत्नी के रूप में इकट्ठे रहने लगे थे। उनके चार पुत्र हुए थे, जो यीशु के सौतेले भाई थे: ''याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा'' (मज़्ी 13:55; देखें मरकुस 6:3)। उनकी कम से कम दो बहनें भी थीं (मज़्ी 13:56; देखें मरकुस 6:3)। इस प्रकार मसीह का पालन–पोषण एक ऐसे परिवार में हुआ था, जिसमें कम से कम नौ लोग थे। हर दृष्टि से, यह एक खुशहाल परिवार था।

परन्तु यीशु के अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरज़्भ करने के लिए घर छोड़ने पर उसके पारिवारिक सज़्बन्ध बदल गए। इससे उसके छोटे भाइयों को कुछ द्वेष और ईर्ष्या तो अवश्य हुई होगी। यूहन्ना ने लिखा है कि वे उसे मसीहा के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते थे और कभी–कभी उसका मज़ाक भी उड़ाते थे (यूहन्ना 7:3–5)।[2] मसीह की माता, मरियम को यह स्पष्ट था कि वह कौन है (देखें लूका 2:19, 51), परन्तु फिर भी वह उसके उद्देश्यों को पूरा नहीं समझती थी (देखें यूहन्ना 2:3, 4)।

यह हमें मरकुस 3 की घटना पर ले आता है। कुछ पृष्ठभूमि पाने के लिए आइए आयत 20 के साथ चर्चा आरज़्भ करते हैं:

> और वह घर में आया: और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे रोटी ज़ी न खा सके। जब उसके कुटुज़्बियों ने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिए निकले; ज़्योंकि कहते थे, कि उसका चिज़ ठिकाने नहीं है[3] (मरकुस 3:20, 21)।

NIV में ''उसके कुटुज़्बियों'' की जगह, ''उसका परिवार'' है। ''पकड़ने के लिए'' वाज़्यांश से यह संकेत मिलता है कि वे यीशु को अपने साथ घर ले जाने के लिए आए थे, चाहे वह जाने को तैयार होता या नहीं।

सज़्भवतया यीशु को खाने के लिए समय न मिल पाना ही इसका एकमात्र कारण नहीं था कि उसके मित्रों और परिवार के लोगों को लगा कि उसका ''चिज़ ठिकाने नहीं'' रहा।[4] विलियम बार्कले ने इसके कई कारण सुझाए हैं, जिससे वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा होगा:[5]

(1) यीशु ने अपनी *सुरक्षा* की कोई परवाह नहीं की थी। कौन ऐसा समझदार होगा जो उस काम को, जिससे उसे हर सप्ताह धन मिल रहा हो, छोड़ दे, ताकि वह ऐसा आवारा बन जाए, जिसे सिर छिपाने की जगह न मिले?

(2) यीशु को स्पष्टतया *सुरक्षा* की कोई चिन्ता नहीं थी। कौन समझदार व्यज़्ति होगा, जो पूरी यहूदी व्यवस्था का सामना करके उसके साथ युद्ध करे, जिसमें उसे हार ही मिलनी थी?

(3) यीशु अपने आप को *समाज* की मुज़्यधारा से अलग करता जा रहा था। ज़्या अनपढ़ लोगों से मेल करके, जिनमें से अधिकतर मज़दूर और कुछ संदेहपूर्ण प्रतिष्ठा वाले लोग थे, सफलता की उज़्मीद करने वाला व्यज़्ति समझदार हो सकता है[6] ?

बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है:

> शारीरिक और [नया जन्म न पाए हुए] लोगों के लिए परमेश्वर की सेवा का उत्साह कभी स्पष्ट नहीं रहा। व्यवसाय, युद्ध, विज्ञान, आनन्द, राजनीति या किसी भी सांसारिक काम के लिए लगन की प्रशंसा की जाती है, उसे सराहा जाता है और उसका जोशपूर्वक अनुसरण किया जाता है; परन्तु किसी व्यक्ति द्वारा अपने आपको पवित्र धर्म की सेवा के लिए पूरी तरह से समर्पित कर देने पर, पड़ोसी सिर हिलाते हुए कहने लगते हैं, ''उसका दिमाग खराब हो गया है!''[7]

हम यह नहीं जानते कि आयत 21 वाले ''उसके कुटुम्बी'' आयत 31 वाले ''उसकी माता और उसके भाई'' ही हैं, परन्तु एक स्वाभाविक बात है कि आयत 21 में मसीह के ''कुटुम्बियों'' ने फैसला किया कि उन्हें उसे पकड़ लेना चाहिए, सो वे उस ओर जहां वह था, ''*निकले*।'' कुछ समय बाद (आयतें 22-29), ''उसकी माता और उसके भाई *आए*'' जहां वह था (आयत 31)। निश्चय ही यह लगता है कि आयत 21 और 31 वाले लोग एक ही हैं।

यदि आयत 21 और 31 में कोई सम्बन्ध है और यदि मरियम और यीशु के भाई ''उसके बजाय'' उसकी सहायता के लिए आए थे, तो यह प्रश्न उठता है कि ''मसीह की माता ने ऐसी योजना में उनका साथ क्यों दिया?'' आखिर, उसे तो दूसरों से अधिक समझ थी, कि यीशु कौन है। यह सही है, परन्तु दो बातें याद रखें: (1) बेशक वह सब कुछ जानती थी कि यीशु कौन है, परन्तु उसका यह ज्ञान अधूरा था; और (2) वह एक मां थी और उसकी भावनाएं मां वाली थीं। कौन ऐसी मां है, जो यह पता चलने पर कि उसका लड़का खाना ठीक से नहीं खा रहा, चिन्तित न हो? सम्भवतया वह अपने बेटे के चित्त ठिकाने न होने की बात से निराश होने वालों में नहीं थी, परन्तु उसे उसकी सुरक्षा की अवश्य चिन्तित होगी।[8]

प्रेम इस बात की मांग करता है कि हम मरियम और यीशु के भाइयों के लक्ष्यों पर हर सम्भव संरचना करें। उनके उद्देश्य भ्रमित होने के बावजूद, उनका यह विश्वास होगा कि उनका हस्तक्षेप ''उसकी भलाई के लिए'' ही होगा।

यह हमें मरकुस 3:31 में ले आता है: ''और उस की माता उसके भाई आए'' (आयत 31क) जहां यीशु था। ''भीड़ उसके आस-पास बैठी थी'' (आयत 32क) और मसीह उनसे ''बातें कर रहा था'' (मत्ती 12:46)। लोग यीशु के साथ इतना सटे हुए थे कि मरियम और उसके भाई ''भीड़ के कारण उस से भेंट न कर सके'' (लूका 8:19[9])।

मत्ती के अनुसार, ''उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बात करना चाहते थे'' (12:46)। उन्होंने यीशु का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश की होगी, परन्तु या तो उसने उन्हें सुना नहीं या अनसुना कर दिया। उन्होंने संदेश भेजा कि वे उससे बात करना चाहते हैं। मैं उन्हें भीड़ के बाहर किसी के कान में यह कहते हुए देख सकता हूं और फिर उस व्यक्ति के अपने अगले व्यक्ति से और इस प्रकार संदेश आगे से आगे भेजते हुए देख सकता हूं: ''आगे बता दो। यीशु की माता और भाई आए हैं! वे उससे मिलना चाहते हैं!'' अन्त में, संदेश पहली पंक्ति तक पहुंच गया, और कइयों ने[10] मसीह

को टोका: ''देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं'' (मरकुस 3:32)।

उनके उद्देश्य चाहे अच्छे थे, बुरे या मिले-जुले, परन्तु यीशु के परिवार के लोग संदेश पूरा होने तक उसकी प्रतीक्षा करने को तैयार नहीं थे। वास्तव में, वे कह रहे थे, ''हम *परिवार* हैं। तुझे चाहिए कि रुककर *अब* हम से मिले। *हमारी* इच्छा उससे जो *तू* कर रहा है महत्वपूर्ण है!''

यीशु का आत्मिक परिवार

असंगत विनती ने मसीह को ''पृथ्वी पर अपनी सेवकाई की सबसे बड़ी दुविधाओं में से एक में, जो सबसे पीड़ादायक थी'' डाल दिया।[11] वह अपने परिवार को डांटने से हिचकिचा रहा होगा, परन्तु वह उन्हें और वहां उपस्थित लोगों को काम की प्रकृति तथा इसका महत्व भी समझाना चाहता था।

यदि मुझे इस परिस्थिति का सामना करना पड़ता, तो मैं तो नहीं कर पाता। मुझे केवल एक बार की बात याद है, जिसमें किसी बातचीत के दौरान मैंने तुरन्त उज़र दिया होगा और वह भी होश में नहीं। मैं तहलका, ओज़्लाहोमा में मसीह की कलीसिया के हॉल में विज़ुअल-एड्ज़ दिखा रहा था। मैं प्लेटफॉर्म पर आगे पीछे आ जा रहा था, जिसमें तरह-तरह की टीचिंग-एड थी। एक बात पर मैं पीछे प्लेटफॉर्म के एक ओर बनी सीढ़ियों पर से नीचे चला गया। सीढ़ियों पर सज़्भलते हुए, मेरे मुंह से निकल गया, ''और यह जो समझता है कि मैं स्थिर हूं वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े, पद को समझाता है।'' परन्तु आम तौर पर किसी नए संकट के समय मुझे बात नहीं आती।

ऐसी स्थिति में उज़म गुरु ने ज़्या किया? उसने असमय रुकावट को समय के अनुकूल निर्देश में बदल दिया। उसने पूछा, ''कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई'' (मज़ी 12:48)। फिर उसने उज़र भी दिया, ''... जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहन और माता है'' (मज़ी 12:50)।

ये शज़्द कहकर मसीह शारीरिक परिवार का महत्व कम नहीं कर रहा था।[12] कुछ सज़्प्रदाय यह ज़ोर देते हैं कि उनके चेले अपने स्वाभाविक परिवारों से सज़्बन्ध तोड़ लें, परन्तु यीशु ने ऐसे किसी सिद्धान्त की शिक्षा नहीं दी, न ही उसने इसे प्रोत्साहन दिया। उसके लिए परिवार महत्वपूर्ण था। उसने शास्त्रियों और फरीसियों को अपने माता-पिता का आदर और सज़्भाल करना छोड़ देने के लिए डांटा (मज़ी 15:1-8)। मरने से पहले उसके अन्तिम कार्यों में से एक अपनी मां की देखभाल सुनिश्चित करना था (यूहन्ना 19:26, 27)। विलियम आरनौट ने लिखा है:

> वह एक सच्चे पुत्र और भाई के प्रेम के साथ अपनी माता व अपने भाइयों से प्रेम करता था। बचपन में जिस गोद में वह सोया था, बड़ा होने पर वह उसे भूला नहीं था। जो स्त्री उसे जन्म से लेकर प्रेम करती रही थी, वह उसे मरने तक अपने दिल से प्रेम करता था।[13]

तो भी, प्रभु यह स्पष्ट करना चाहता था कि इससे भी गहरा, इससे भी कीमती और किसी भी सांसारिक सम्बन्ध से मजबूत एक और सम्बन्ध है।

इस बात को समझाने के लिए, मसीह ने ''उन पर जो उसके आसपास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं'' (मरकुस 3:34)। मत्ती के वृत्तांत के अनुसार, उसने ''अपने चेलों की ओर हाथ बढ़ाकर कहा, देखो; मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहन और माता है''[14] (मत्ती 12:49, 50)।

यह चिन्ता न करें कि आप यीशु के ''भाई,'' या उसकी ''बहनें'' या उसकी ''माता'' हो सकती हैं या नहीं।[15] वह मसीही लोगों को अलग-अलग तीन श्रेणियों में नहीं बांट रहा था, बल्कि यह यह कहने का कि ''जो मेरे पिता की इच्छा पर चलता था वही मेरा *परिवार* अर्थात मेरा *आत्मिक* परिवार है'' चौंकाने वाला ढंग है। लूका के शब्दों का इस्तेमाल करें, तो उसने ज़ोर दिया है कि उसका परिवार वही लोग हैं ''जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं'' (लूका 8:21)।

मत्ती और मरकुस की पुस्तक में, मसीह पिता की *''इच्छा''*पर चलने की बात कर रहा था, जबकि लूका की पुस्तक में ''परमेश्वर का *वचन*'' वाक्यांश का इस्तेमाल हुआ है, परन्तु इनमें कोई विरोधाभास नहीं है। परमेश्वर की *इच्छा* को जानने का एकमात्र ढंग उसका *वचन* ही है।

यदि हम प्रभु के परिवार के सदस्य बनना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर का वचन *सुनना* और फिर उसे *मानना* आवश्यक है (देखें मत्ती 7:21-27)।[16] ''मानना'' में क्या करना होता है? वचन को ''मानने'' के लिए उस पर जो यह सिखाता है, विश्वास करना उसे इसकी आज्ञाओं का पालन करना और उस सब आशा को करना शामिल है, जिसकी यह प्रतिज्ञा करता है।[17]

मसीह के समय के यहूदियों को इस सबक की बहुत आवश्यकता थी। उन्हें लगता था कि अब्राहम की संतान होने के कारण वे परमेश्वर के परिवार के सदस्य बने रहने के अधिकारी हैं (देखें लूका 3:7-9; यूहन्ना 8:39)। उन्हें यह समझ होनी आवश्यक थी कि शारीरिक सम्बन्ध परमेश्वर के घराने में बने रहने की गारन्टी नहीं थे (देखें रोमियों 9:6, 7)। यीशु के पीछे चलने का निर्णय लेने के लिए अब्राहम की सन्तान होना आवश्यक नहीं था। वंशावली का नहीं, आज्ञा मानने का महत्व था। यदि वे पिता के साथ सम्बन्ध बनाए रखना चाहते थे, तो उनके लिए *सुनना* और *मानना* आवश्यक था।

आपको और मुझे भी इस सबक की बहुत आवश्यकता है। वचन को सुनना आवश्यक है (रोमियों 10:17)। हर रोज बाइबल पढ़ना (प्रेरितों 17:11), हर बाइबल क्लास में भाग लेना और आराधना में भाग लेने की कोशिश करना (इब्रानियों 10:25) सराहनीय काम है। प्रचारक को अपने सुनने वालों को बाइबलें खोलते और संदेश सुनकर लिखते देखना अच्छा लगता है (देखें भजन संहिता 119:16)। फिर भी ये कार्य तो सराहनीय हैं ही, परन्तु यदि कोई केवल वचन का सुनने वाला ही है और सुनकर अमल नहीं करता तो उसे ''कुछ लाभ

नहीं होगा।''[18] यीशु के सौतेले भाई याकूब ने लिखा है, ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं, जो अपने आपको धोखा देते हैं'' (याकूब 1:22)।

हमने देखा कि यीशु के दो परिवार थे–पहला सांसारिक और दूसरा आत्मिक। उसने बताया कि दूसरे परिवार का सदस्य प्रभु की आज्ञा मानने से बना जा सकता है। उसने ज़ोर दिया कि जितना आवश्यक सांसारिक परिवार में होना है, उससे भी आवश्यक आत्मिक परिवार है।

मसीही व्यक्ति के दो परिवार

आइए, अब उन दो परिवारों में चलते हैं, जिनके आप और मैं सदस्य हैं।

सांसारिक परिवार

मुझे मसीही माता–पिता, डेव एच. और लिलियन रोपर और एक भाई, कोय की आशीष मिली है। प्रभु ने मेरे जीवन में एक मसीही पत्नी, जो; तीन बेटियां, सिंडी, डैबी और एंजी; दो दामाद, रिचर्ड होनाकर और डैन लवजॉय; और दो नाती, सेथ डेविड और रेचल देकर और अधिक आशीष दी है।

आपका, जन्म भी एक सांसारिक परिवार में हुआ था। उज़्मीद है कि वह एक मसीही परिवार था; परन्तु यदि वह मसीही परिवार नहीं भी था, तो भी आपको ऐसे लोग मिले जो आपकी देखभाल और आपकी जरूरतों को पूरा करते थे। हो सकता है कि मेरी तरह आप भी विवाहित हों और आपके बच्चे हों–या न हों। जो भी हो, मुझे उज़्मीद है कि आप परिवार के मूल महत्व के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। यह परमेश्वर द्वारा बनाई गई पहली संस्था थी (उत्पज़ि 2:18, 21–24; 4:1) और आज भी समाज के कोने का पत्थर है।

अफ़सोस की बात है कि आज कुछ लोग परिवार के महत्व को समझ नहीं पा रहे हैं। कुछ लोग अपने परिवारों को छोड़कर कहीं चले जाते हैं, जबकि दूसरे उनकी परवाह नहीं करते। कई माता–पिता अपने बच्चों की परवाह नहीं करते और कई बच्चे अपने बुज़ुर्ग माता–पिता की देखभाल नहीं करते। पौलुस ने लिखा है कि ''यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है'' (1 तीमुथियुस 5:8)। फिर, उसने कहा कि बच्चों और नाती–पोतों को ''पहले अपने ही घराने के साथ भज़्ति का बर्ताव करना और अपने माता–पिता आदि को उनका हज़्क देना'' चाहिए (1 तीमुथियुस 5:4)।

आत्मिक परिवार

यदि हम समझ गए हैं कि सांसारिक परिवार कितना महत्वपूर्ण है तो यह वाज़्य हमारे लिए और अर्थ जोड़ देता है कि इससे भी महत्वपूर्ण एक परिवार है–आत्मिक परिवार अर्थात परमेश्वर का परिवार। पौलुस ने इफिसुस के मसीही लोगों के नाम पत्र में लिखा था, ''इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और

परमेश्वर के *घराने के हो* गए'' (इफिसियों 2:19)। ''घराना'' शब्द ''परिवार'' कहने का ही दूसरा ढंग है। द न्यू सैंचुरी वर्ज़न में आयत का अन्तिम भाग ''तुम परमेश्वर के घराने के हो'' है। गलातियों 6:10 में इस परिवार को ''विश्वासी भाई'' और 1 पतरस 4:17 में ''परमेश्वर का घर'' कहा गया है।[19]

यह आत्मिक परिवार क्या है ? पौलुस ने बताया कि यह परिवार कलीसिया है। उसने तीमुथियुस को बताया कि ''मैं ... ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूं कि ... तू जान ले, कि *परमेश्वर का घर,* जो *जीवते परमेश्वर की कलीसिया* है, और सत्य का खम्भा, और नींव है; उसमें कैसा बर्ताव करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 3:14, 15)।

इस परिवार में, परमेश्वर हमारा पिता है (मत्ती 6:9; रोमियों 1:7), और हम उसके बच्चे हैं (यूहन्ना 1:12, 13; रोमियों 8:14, 15; इफिसियों 5:1; फिलिप्पियों 2:15; 1 यूहन्ना 3:1, 2)। पौलुस लिखता है कि ''आत्मा आप ही ... गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं'' (रोमियों 8:16, 17)। प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के शब्द ही दोहराए थे: ''और मैं तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है'' (2 कुरिन्थियों 6:18)। इस आत्मिक घराने में, कलीसिया के दूसरे सदस्य भाई और बहनें हैं (प्रेरितों 6:3; रोमियों 16:1; 1 कुरिन्थियों 7:15; फिलेमोन 1, 2; याकूब 2:15)।[20]

हम इस परिवार के लोग कैसे बनते हैं ? यीशु ने कहा कि हम वचन को सुनकर और मानकर उसके परिवार के लोग बनते हैं। यूहन्ना ने लिखा है कि हम ''नया जन्म'' लेकर परमेश्वर की सन्तान बनते हैं (देखें यूहन्ना 1:11-13; 3:3, 5)। लूका ने लिखा है कि लोग परमेश्वर के परिवार, अर्थात कलीसिया में मसीह में विश्वास करके, अपने पापों से मन फिराकर और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेकर शामिल होते थे (प्रेरितों 2:36-38, 41, 47;[21] देखें 1 कुरिन्थियों 12:13)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के परिवार का सदस्य बनने के तीन ढंग हैं; बल्कि, यीशु, यूहन्ना और लूका एक ही प्रक्रिया की बात कर रहे थे। वह प्रक्रिया क्या है ?

हम वचन सुनते हैं, जिससे विश्वास उत्पन्न होता है (रोमियों 10:17)। फिर हमारे लिए अपने पापों से मन फिराकर उस वचन को ''मानना'' (लूका 13:3), यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करना (मत्ती 10:32), और बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेना आवश्यक होता है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 22:16)। यह सब करने पर हमें परमेश्वर के परिवार में ''जल और आत्मा से जन्म'' मिल जाता है (यूहन्ना 3:5)। पतरस ने लिखा है, ''... तुम ने ... सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है ... क्योंकि तुमने नाशमान नहीं, पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है'' (1 पतरस 1:22, 23)। इस प्रकार, हम परमेश्वर के परिवार के सदस्य बनते हैं।

मैं सांसारिक परिवार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। उसके आत्मिक

परिवार, अर्थात कलीसिया के लिए मैं और भी ज़्यादा परमेश्वर का धन्यवादी हूं। दोनों की संक्षिप्त तुलना इस प्रकार है: सांसारिक परिवार और आत्मिक परिवार दोनों ही परमेश्वर के बनाए संस्थान हैं। पहला लौकिक है, जबकि दूसरा अलौकिक। पहले में शारीरिक जन्म से प्रवेश किया जाता है, जबकि दूसरे में आत्मिक जन्म के द्वारा। पहला वंश बढ़ाने के लिए है, जबकि दूसरा नया जन्म देने के लिए (तीतुस 3:5)। पहला समय के लिए है (मज़ी 22:30), जबकि दूसरा समय और अनन्तकाल दोनों के लिए (इब्रानियों 12:23)। पहला अनिवार्य है; दूसरा ज़रूरी है।[22] पहला अच्छा है; दूसरा उज़म है। मुझे इसमें यह भी जोड़ना चाहिए कि दोनों में प्रवेश कष्ट के द्वारा ही सज़्भव है; पहले में, हमारी माताएं कष्ट सहती हैं; जबकि दूसरे में, हमारे पापों के लिए क्रूस पर यीशु कष्ट सहता है! (देखें प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:23, 25.)

विलियम बार्कले ने लिखा है कि असली रिश्तेदारी में साझा अनुभव, साझी रुचि, साझी आज्ञाकारिता और साझा लक्ष्य होना आवश्यक है।[23] ये सब बातें परमेश्वर के परिवार और कलीसिया में ही मिलती हैं। पता नहीं कि कितनी बार मैंने कलीसिया के सदस्य से यह सुना होगा कि उसे अपने शारीरिक भाइयों और बहनों की अपेक्षा मसीह में अपने भाइयों और बहनों का साथ कहीं ज्यादा अच्छा लगता है।

परमेश्वर के परिवार में होने की आशीष को मैं शज़्दों में व्यज़्त नहीं कर सकता। किसी देश के शाही परिवार का सदस्य होना बड़े सज़्मान की बात होगी। अरबपति पिता की सन्तान होने के कितने लाभ हैं, परन्तु इनमें से किसी की भी तुलना प्रभु के परिवार का सदस्य होने से नहीं की जा सकती, जिसमें परमेश्वर आपका पिता है! दिवंगत सी. आर. निकोलस को एक बार किसी ने कहा था कि वह ऐसे चलते हैं जैसे ''संसार उन्हीं का'' हो। इस सज़्माननीय बुज़ुर्ग प्रचारक ने उज़र दिया था, ''हां मेरे पिता का ही है!''

आत्मिक परिवार के इतना महत्वपूर्ण होने के कारण, यीशु ने बताया कि इस परिवार के प्रति हमारी निष्ठा किसी भी और निष्ठा से अधिक होनी चाहिए।[24] लूका 14:26 में, उसने ये चौंकाने वाले शज़्द कहे, ''यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के बालों और भाइयों और बहनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।'' गोर्डन पॉवल ने रेडियो के अपने श्रोताओं को ''यीशु की कठिन बातें'' पर प्रवचनों की शृंखला के लिए टॉपिक देने को कहा। उसे सबसे अधिक पत्र लूका 14:26 पर प्रचार करने के लिए मिले थे।[25]

आप समझ गए होंगे कि लूका 14:26 में ''अप्रिय'' शज़्द का अर्थ वह नहीं है, जिसे सामान्यतया हम ''घृणा'' कहते हैं। वरना यीशु अपना ही विरोध करने वाला ठहरता। पहाड़ी उपदेश में उसने अपने शत्रुओं से प्रेम करने की शिक्षा दी (मज़ी 5:44)। निश्चय ही वह हम से अपने शत्रुओं से प्रेम करने और अपने घर के लोगों से घृणा करने को नहीं कहेगा।

यह पता चलने पर कि बाइबल में प्रयुज़्त ''अप्रिय'' शज़्द का अर्थ कई बार ''कम प्रेम करना'' है स्पष्ट अन्तर गायब हो जाता है (देखें व्यवस्थाविवरण 21:15)। मज़ी

10:37 में ऐसे ही एक वाज़्य से तुलना करने पर हम पाते हैं कि लूका 14:26 में "अप्रिय" का अर्थ यही है: "जो माता या पिता को मुझ *से अधिक* प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझ *से अधिक* प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।" इस प्रकार लूका 14:26 में मसीह कह रहा था कि हम अपने सांसारिक परिवारों को उससे और परमेश्वर *से कम* प्रेम करें।

परन्तु हमें सावधान रहना चाहिए कि कहीं हम लूका 14 के शज़्दों को इतना छील न दें कि उनका प्रभाव ही जाता रहे। परमेश्वर और अपने परिवार के लिए हमारा प्रेम इतना अधिक होना चाहिए कि *तुलना करने पर,* अपने सांसारिक परिवारों के लिए हमारा प्रेम *अप्रिय* माना जाए।[26]

फिर, मैं ज़ोर देता हूं कि इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने सांसारिक परिवारों को भूल जाएं। कलीसिया/राज्य को प्राथमिकता देने वाले (मज़्ी 6:33) पाते हैं कि इससे उनके सांसारिक परिवारों के सज़्बन्ध मजबूत हुए हैं (देखें इफिसियों 5:25, 28, 33; 6:1-4)।[27] विलियम हैंड्रिज़्सन ने कहा है कि "इस नियम को मानकर [अपने आत्मिक परिवार को प्राथमिकता देकर] ... हम अपने सांसारिक परिवार की सबसे अच्छी सेवा कर सकते हैं।"[28]

आपके दो परिवार

हमने यीशु के दो परिवारों और मसीही व्यज़्ति के दो परिवारों की बात की है। अब आपके दो परिवारों को करीब से देखते हैं।

दोनों में तालमेल

अपने दोनों परिवारों के एक हो जाने पर आपको "दोनों संसारों की उज़म" चीज़ें मिल जाती हैं।

एक पल के लिए, आइए उस कहानी में वापस जाते हैं, जो हमने शुरू की थी। सामान्य की तरह, घटना को लिखने के बाद लेखकों की इसे शृंखला में बताने की कोई रुचि नहीं हुई। यीशु की डांट के बाद, ज़्या उसकी माता और भाई वहीं खड़े रहे? भीड़ को शिक्षा देने के बाद, ज़्या यीशु अपने परिवार से मिला? इसके बारे में हमें कुछ नहीं बताया गया था। हम एक बात जान सकते हैं कि यीशु ने उन्हें या किसी और को अपने उद्देश्य में रुकावट नहीं बनने दिया। कोई इसे ज़बर्दस्ती घर ले जाकर आराम नहीं करवा सकता।[29] हम भी तर्कसंगत रूप से सुनिश्चित हो सकते हैं कि यीशु ने काम से फुर्सत मिलने पर अपने परिवार को नज़अन्दाज़ नहीं किया। उसकी माता और उसके भाई उसके जीवन के वृज़ांत में फिर दिखाई देंगे, और ऐसा कोई संकेत नहीं है कि मसीह ने उनके साथ सज़्बन्ध तोड़ लिए हों (यूहन्ना 7:2-10; 19:25-27)।

परन्तु अपने परिवार के साथ यीशु के सज़्बन्धों में वापस आने का मेरा उद्देश्य यह ज़ोर देना है कि अन्त में इस कहानी का सुखद अन्त होता है। अन्ततः, उसके भाई उस पर

विश्वास करने लगे थे। पुनरुत्थान के बाद के अपने दर्शनों में उसने अपने सौतेले भाई याकूब को दर्शन दिए थे (1 कुरिन्थियों 15:7)। उसकी माता और उसके भाई पवित्र आत्मा के आने की प्रतीक्षा कर रहे प्रेरितों के साथ यरूशलेम में भी थे (प्रेरितों 1:14)। याकूब यरूशलेम की कलीसिया का एक अगुआ बन गया (प्रेरितों 12:17; 15:13; 21:18; गलातियों 1:19) और उसने याकूब की पुस्तक लिखी (याकूब 1:1)। दूसरे सौतेले भाइयों में से एक यहूदा (या ज्यूड) ने यहूदा की पुस्तक लिखी (यहूदा 1)। कलीसिया के इतिहासकार यूसज़्यूस का कहना है कि दूसरे भाई भी अलग-अलग मण्डलियों में अगुओं के रूप में सेवा करते थे (देखें 1 कुरिन्थियों 9:5)।

अन्य शज़्दों में, यीशु का सांसारिक परिवार अन्त में उसके आत्मिक परिवार का ज़ाग बन गया! मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मेरे माता-पिता मसीही हैं; मेरी पत्नी मसीही है; मेरी तीन लड़कियां और दो दामाद मसीही हैं; मेरे बड़े नाती, सेथ डेविड ने हाल ही में बपतिस्मा लिया था! अपने प्रियजनों के साथ परमेश्वर के सिंहासन के पास उसकी स्तुति करने के लिए हाथ में हाथ डालने से बड़ी मेरी कोई इच्छा नहीं है!

आपके लिए मेरी प्रार्थना है कि आपको भी ऐसा आनन्द मिले।

दोनों में झगड़ा

दुख की बात है कि हो सकता है कि दोनों परिवारों में मेल न हो। कई बार गज़्भीर झगड़े हो जाते हैं। इस बारे में यीशु ने पहले से ही सचेत दिया था। उसने कहा:

> यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं। मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं। मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे (मज़ी 10:34-36)।

उसने अपने चेलों को बताया था, "और तुज़्हारे माता-पिता और भाई और कुटुज़्ब, और मित्र भी तुज़्हें पकड़वाएंगे; यहां तक कि तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे" (लूका 21:16)। इन दो पदों का यह अर्थ कदापि नहीं है कि मसीह चाहता था कि परिवारों में झगड़ा हो। बल्कि, वह जानता था कि सुसमाचार की प्रकृति ही ऐसी है कि इसके प्रति समर्पित होने वालों को सांसारिक सोच वाले लोग समझ नहीं पाएंगे, और इस कारण कभी-कभी झगड़ा हो जाएगा।

आप में से कुछ लोग समझ रहे होंगे कि मैं ज़्या कह रहा हूं। परमेश्वर के काम को अपनी निजी आवश्यकताओं से प्राथमिकता देने के कारण यीशु के मित्रों और परिवार को लगता था कि उसका चिज़ ठिकाने नहीं है। हो सकता है कि जो सही है, उसे करने का निर्णय लेने के कारण लोग आपको "पागल" कहने लगें। यदि ऐसा होता है तो यह कठिन है, या नहीं?

मैं यह सुझाव नहीं दे रहा कि आप अपने परिवार या अपने मित्रों में हलचल मचा दें।

पौलुस ने लिखा है, ''जहां तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो'' (रोमियों 12:18)।[30] मैं यह कह रहा हूं कि यदि, दूसरे लोगों के साथ मिलने के आपके भरसक प्रयासों के बावजूद, आपका परिवार आपको छोड़ देता है, तो भी यह जानकर आनन्द करें कि प्रभु आपको नहीं छोड़ेगा (इब्रानियों 13:5)। उसकी प्रतिज्ञा पर ध्यान दें:

> यीशु ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं, जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या लड़के-बालों या खेतों को छोड़ दिया हो। और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़के–बालों और खेतों को, पर उपद्रव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन (मरकुस 10:29, 30)।

सारांश

मेरी प्रार्थना है कि आपके दोनों परिवारों में अच्छा तालमेल हो। यदि ऐसा नहीं होता, तो मैं आपसे आग्रह करता हूं कि अपने उन प्रियजनों को परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में लाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कोई भी प्रयास बड़ा नहीं है। यदि आप इसमें सफल नहीं होते, तो भी यह जानकर आनन्दित हों कि आपने अपना पूरा ज़ोर लगा दिया है।

इसे पूरा करने में कोई भी आशा पाने के लिए, पहले आपको स्वयं परमेश्वर के परिवार के निष्ठावान सदस्य होना आवश्यक है। क्या आप ''पीछे चलने वाले'' होने से ''परिवार'' के लोग बन गए हैं ? क्या आपने विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा ''नया जन्म'' पा लिया है ? जिस कहानी का हमने अध्ययन किया है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि यीशु चाहता है कि हम उसके साथ अपने सम्बन्ध को बड़ी गम्भीरता से लें। यदि हम किसी तरह आपकी सहायता कर सकते हैं, तो हमें अवश्य बताएं। ...

टिप्पणियां

[1]''एक व्यस्त दिन'' पाठ का परिचय देखें। [2]यूहन्ना 7 अध्याय की 3 और 4 आयतों को आयत 5 के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। [3]मसीह के शत्रुओं ने एक अवसर पर ऐसा ही आरोप लगाया था (यूहन्ना 10:20)। इस प्रकार बुराई सहने वाला मसीह परमेश्वर का न तो पहला और न अन्तिम सेवक था (देखें 2 राजा 9:11; प्रेरितों 26:24, 25)। [4]हमारे यहां, ''यह केवल अन्तिम तिनका था'' कहा जाएगा। [5]विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ़ मार्क,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 76–77. अगली पंक्तियां बार्कले के प्वाइंट की मेरी व्याख्या है। [6]अमेरिका में, ''असंतुष्ट, रेड नैक, और लोफर'' कहेंगे। [7]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन मार्क* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन, हाउस, 1975), 63. [8]मरियम (रिश्तेदार) की बहन का पुत्र (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, इलिशबा का पुत्र) पहले ही गिरफ़्तार हो चुका था, और उसकी मृत्यु की बात सबको पता थी। कौन मां होगी, जो अपने पुत्र की परवाह न करे ? [9]इस पद की तुलना

मरकुस 2:1, 2 से करें। [10]मरकुस के वृज़ांत में ''*उन्होंने* उससे कहा'' है।

[11]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *द गॉस्पल ऑफ़ मार्क* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1967), 74. [12]यदि यह प्रवचन पहले वाले प्रवचन के बाद सुनाया जाता है, तो आपको कहना चाहिए, ''मैं फिर इस पर ज़ोर देता हूं।'' [13]विलियम आनौट, *लैसर पैरेबल्स ऑफ़ अवर लॉर्ड* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पज़्लिकेशन्स, 1884), 115. [14]इस सूची में यीशु ने ''पिता'' शामिल नहीं किया, ज़्योंकि यह भूमिका केवल परमेश्वर के लिए सुरक्षित है (मज़ी 23:9)। [15]निश्चय ही, जो लोग लज़्बे समय से कलीसिया के सदस्य हैं, उन्हें दूसरे मसीहियों को जानने का सुअवसर मिला है, जो उनके लिए भाई, बहनों और माताओं की तरह हैं (1 तीमुथियुस 5:1, 2)। [16]चाहें तो आप इस पर ज़ोर दे सकते हैं कि परमेश्वर की इच्छा को जानने का हमारे पास एकमात्र ढंग यीशु के द्वारा है (मज़ी 11:27)। इसलिए परमेश्वर की इच्छा को सुनने और मानने के लिए, वह सुनना और मानना आवश्यक है, जो *मसीह* ने सिखाया है। [17]यह वाज़्य आर. सी. एच. लेंसकी, *द इन्टरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट लूक'स गॉस्पल* (मिनियापुलिस: ऑगस्बर्ग पज़्लिशिंग हाउस, 1946), 461. [18]यह वाज़्यांश गलतियों 5:2 से लिया गया है। ऐसे ही उपयोग के लिए, देखें मरकुस 8:36; इब्रानियों 4:2; याकूब 2:14, 16. [19]परमेश्वर के परिवार की बात करने वाला एक और पद इफिसियों 3:15 है। इफिसियों 3:14, 15 में इस प्रकार लिखा है, ''मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूं, जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर हर एक घराने का नाम रखा जाता है।'' [20]यीशु हमें ''भाई'' भी कहता है (इब्रानियों 2:11)।

[21](हिन्दी बाइबल तथा कई अन्य अनुवादों में प्रेरितों 2:47 में नहीं है, परन्तु KJV में कलीसिया के लिए ''चर्च'' शज़्द है–अनुवादक।) ज़्योंकि राज्य/कलीसिया (मज़ी 16:18, 19) की स्थापना प्रेरितों के काम 2 अध्याय में (देखें प्रेरितों 1:6–9; 2:1–4) हुई थी, इसलिए हम जानते हैं कि आयत 47 में ''उन में'' उन्हीं लोगों के लिए कहा गया है, जो राज्य के लोग अर्थात कलीसिया के सदस्य हैं। [22]अर्थात, स्वर्ग में जाने के लिए दूसरी अनिवार्य बात है और आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक है। [23]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मार्क,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 82–83. [24]लूका 9:59–62 का इस्तेमाल अपने परिवार के प्रति वफादार होने की गलत प्राथमिकताओं के उदाहरण के रूप में किया जा सकता है। [25]गोर्डन पॉवल, *डिफिकल्ट सेइंग्स ऑफ़ जीज़स* (पृष्ठ नहीं: ज़्लेमिंग एच. रेवल कं., 1962), 21. [26]यदि इस वाज़्य में विस्तार की आवश्यकता हो, तो आप कुछ उदाहरणों की कोशिश कर सकते हैं: ''जब मैं लड़का था, तो मुझे लगता था कि मैं भाग सकता हूं–परन्तु जब मैंने विश्व स्तर के धावक को देखा, तो ऐसे लगा जैसे मैं भाग ही नहीं सकता।'' ''कॉलेज में अपने पहले कुछ साल मैं एक सिंक में ही अपने कपड़े धोता था। मुझे लगता था कि मैंने अपने सफेद कपड़े और सफेद कर लिए हैं। जब तक कि अन्त में मैंने उन्हें एक और सफ़ेद चीज़ के पास रखकर नहीं देखा, फिर मुझे अहसास हुआ कि वे तो सफेद हुए ही नहीं थे।'' [27]परन्तु कई बार परिवार के दूसरे सदस्यों की ओर से शत्रुता के कारण सज़्बन्ध खराब हो जाते हैं। इस प्रवचन में बाद में इसका उल्लेख किया गया है। [28]विलियम हैंड्रिज़्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्री: द गॉस्पल ऑफ़ लूक* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1978), 437. [29]यदि यीशु को लोगों की भीड़ चोटी से नीचे नहीं गिरा सकी थी (लूका 4:28–30), तो उसके भाई उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध खींचकर कैसे ले जा सकते थे। [30]अज़्सर किसी मसीही स्त्री का पति मसीही न होने पर झगड़ा हो जाता है। 1 पतरस 3:1–6 में पतरस ने मसीही पत्नियों को बताया कि ऐसी स्थिति में उन्हें ज़्या करना चाहिए।